ग्रन्थमाला ‘बालसंस्कार’ : खण्ड १

सुसंस्कार एवं उत्तम व्यवहार

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाके उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन संस्था

卐 सनातनके ग्रन्थोंकी भारतकी भाषाओंके अनुसार संख्या 卐

मराठी ३४४, अंग्रेजी २०१, कन्नड १९९, हिन्दी १९६, गुजराती ६८, तेलुगु ५४, तमिल ४३, बांग्ला ३०, मलयालम २४, ओडिया २२, पंजाबी १३, नेपाली ३ एवं असमिया २

अगस्त २०२४ तक ३६६ ग्रन्थोंकी १३ भाषाओंमें ९७ लाख ३३ सहस्र प्रतियां !

ग्रन्थके संकलनकर्ताओंका परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजी के अद्वितीय कार्य का संक्षिप्त परिचय

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था'की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्तिके लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्गकी निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधना से २०.९.२०२४ तक १२८ साधकोंको सन्तत्व प्राप्त तथा १,०४३ साधक सन्तत्वकी दिशामें अग्रसर हैं ।

३. देवता, साधना, राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विषयोंपर विपुल ग्रन्थनिर्मिति

४. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात' के संस्थापक-संपादक

५. धर्माधिष्ठित हिन्दूराष्ट्रकी (ईश्वरीयराज्यकी) स्थापनाका उद्घोष (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र'की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन एवं उन्हें आध्यात्मिक स्तरपर दिशादर्शन !

७. भारतीय संस्कृतिके वैश्विक प्रसार हेतु 'भारत गौरव पुरस्कार' देकर फ्रान्सके संसदमें सम्मान (५ जून २०२४)

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी का साधकों को आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ – जयंत बाळाजी आठवले
१५.५.१९९८

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातनकी ग्रन्थ-रचनाकी सेवा करनेके साथ ही राष्ट्रजागृति एवं धर्मप्रसार करनेवाली प्रसारसामग्रीके (सनातन पंचांग, धर्मशिक्षा फलक इत्यादि के) लिए लेखन करते हैं । साधना, राष्ट्र एवं धर्म सम्बन्धी नियतकालिक 'सनातन प्रभात'में प्रबोधनपरक लेखन भी करते हैं ।

अनुक्रमणिका

१. सुसंस्कार क्यों आवश्यक हैं ? १०

२. रातमें शीघ्र सोकर सवेरे समयसे उठना ! १२

३. भगवानकी पूजा-अर्चना, उपासना आदि करें ! १३

४. माता-पिता और घरके बडोंको झुककर प्रणाम करें ! १५

५. माता-पितासे कैसा व्यवहार करें ? १६

६. अतिथियोंका स्वागत और आवभगत कैसे करें ? २०

७. विद्यालयीन सामग्री कैसी हो ? उसकी देखभाल कैसे करें ? २२

८. विद्यालयको विद्याका मन्दिर समझकर आदर्श पद्धतिसे आचरण करें ! २६

९. लिखावट सुन्दर और सुवाच्य हो ! ३२

१०. पढते समय क्या सावधानियां बरतें ? ३३

११. पढाई अच्छी होनेके लिए क्या करें ? ३४

१२. 'कॉपी', 'रैगिंग' आदि कुप्रथाओंसे दूर रहें ! ३६

१३. निराशा अथवा परीक्षामें असफल होनेपर आत्महत्याका विचार करना मूर्खता है ! ३८
१४. पढाईके अतिरिक्त अन्य क्या पढें ? ३९
१५. शरीरसम्पदा स्वस्थ रखनेके लिए क्या करना चाहिए ? ४६
१६. कौनसे खेल नहीं खेलने चाहिए तथा कौनसे खेल खेलने चाहिए ? ४७
१७. मनोरंजक अभिरुचियोंकी अपेक्षा जीवनमें लाभदायक सिद्ध होनेवाली अभिरुचियां ही अपनाएं ! ५१
१८. बच्चो, सदैव अच्छे साथियोंकी संगतिमें ही रहें ! ५७
१९. बच्चो, आपके आदर्श कैसे हों ? ६०
२०. सुसंस्कृत होनेके लिए दूरदर्शन (टी.वी.) से दूर रहें ! ६६
२१. मनोरंजक गीतोंकी अपेक्षा ईश्वरभक्ति एवं राष्ट्रभक्ति बढानेवाले गीत सुनें और गाएं ! ७३
२२. बच्चो, इन अच्छी बातोंको अपनाओ ! ७७

परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवलेजीकी उपाधिसम्बन्धी विवेचन !

महान महर्षियोंने सहस्रों वर्ष पहले नाडीपट्टिकाओंमें भविष्य लिख रखा है। इन जीवनाडी-पट्टिकाओंके वाचनके माध्यमसे महर्षि सनातन संस्थाका मार्गदर्शन करते हैं । ‘१३.७.२०२२ से ‘सप्तर्षि जीवनाडी-पट्टिका’के वाचन के माध्यमसे सप्तर्षिकी आज्ञा अनुसार परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवलेजीको ‘सच्चिदानंद परब्रह्म’ सम्बोधित किया जा रहा है । तब भी, इससे पहलेके लेखनमें अथवा अब भी साधकोंद्वारा दिए लेखनमें उन्होंने ‘प.पू.’ अथवा ‘परात्पर गुरु’ की उपाधियोंसे सम्बोधित किया हो, तो उसमें परिवर्तन नहीं किया गया है ।

भूमिका

आजके बालक भविष्यमें देशके आधारस्तम्भ हैं । देशका आधारस्तम्भ बननेके लिए बालक गुणसम्पन्न एवं आदर्श होने चाहिए । आजके बालकोंकी स्थिति कैसी है ? अनेक बच्चे बडोंका कहना नहीं मानते, मन लगाकर पढाई नहीं करते एवं शिक्षकोंका उपहास उडाते हैं । अनेक बच्चे घण्टों क्रिकेट खेलते हैं अथवा दूरदर्शन, भ्रमणभाष देखते हैं । कुछ बच्चे बडे होकर चलचित्र-कलाकार बननेका ध्येय रख, निरन्तर चलचित्रों के गाने गुनगुनाते रहते हैं । कुछ बच्चे दुष्ट बच्चोंकी संगतिमें पड जाते हैं, तो कुछ गुटका, तम्बाकू आदि व्यसन करते हैं । इन सब कारणोंसे बच्चे स्वार्थी, चिडचिडे, हठी, चंचल एवं विकृत बनते जा रहे हैं । यह सब रोकनेके लिए बच्चोंपर सुसंस्कार करना आवश्यक हो गया है ।

इस ग्रन्थमें कुसंस्कारोंके दुष्परिणाम तथा सुसंस्कारी स्वभावका महत्त्व तथा लाभ बताया गया है । यह पढकर बच्चोंको अच्छे तथा बुरे संस्कारोंका अन्तर समझमें आएगा । उन्हें यह भी समझमें आएगा कि पढाई किस पद्धतिसे करनी चाहिए, कौन-कौनसी रुचिके कार्य करने चाहिए, गुरुजनोंसे कैसा व्यवहार करना चाहिए एवं अतिथियोंका स्वागत कैसे करना चाहिए । बच्चे ये सूत्र सीखकर जीवनमें सफल होनेके साथ सद्‌गुणी एवं आदर्श भी बनेंगे ।

बच्चोंसे सम्बन्धित बातोंके विषयमें अभिभावकोंका उचित दृष्टिकोण, उनके द्वारा बच्चोंसे करवाए जानेवाले प्रयोग आदि भी इस ग्रन्थमें दिए हैं ।

श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि भावी पीढी सुसंस्कृत, धार्मिक एवं राष्ट्रभक्त बननेके लिए यह ग्रन्थ उपयुक्त सिद्ध हो ! – **संकलनकर्ता**